JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अंकित जीवन मूल्य'

संगीता रॉय (शोधार्थी–पी–एच.डी)
प्रा. रामकृष्ण मोरे कला,वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,आकुर्डी, पुणे
(सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे से संलग्न)

सार : चित्रा मुद्गल जी अपनी कथा साहित्य में जीवन मूल्य को उद्घाटित कर अपने लेखकीय सरोवर के लिए जगह का निर्माण किया है। उनकी कथाओं में ग्रामीण परिवेश से लेकर आधुनिकता तक के स्त्री शक्ति मूल्य को वैशिष्ट्य समाहित है। सामान्य गृहिणी की स्तिथि से लेकर नौकरीपेशा स्त्रियों की भूमिका और चेतना तक, फिल्मी विज्ञापन से लेकर, पत्रकारिता के अन्याय के प्रतिकार में कड़ी स्त्री भंगिता के साथ, पारिवारिक, राजनैतिक, सामाजिक जीवन मूल्य,धार्मिक एवं आर्थिक जीवन मूल्य आदि पर बड़ी ही समग्रता एवं संतुलन दृष्टिकोण से विचार किया है। यही उनके साहित्य का केंद्रीय स्वर है।

बीज शब्द - जीवन मूल्य, स्त्री शक्ति मूल्य, ग्रामीण परिवेश।

प्रस्तावना – प्रस्तुत लघु आलेख में "चित्रा मुद्गल : वैयक्तिक एवं साहित्यिक जीवन का परिचय" के माध्यम से मैंने यह बताने का प्रयास करी है कि लेखिका चित्र मुद्गल जी का जीवन संघर्ष पूर्ण रहा है, इसीलिए उनकी कथा साहित्य में जीवन मूल्य के अनेक पहलुओं का उजागर देखने को मिलता है। इस शोध के माध्यम से जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष्य में चित्रा मुद्गल का साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालने का प्रयास है।

समकालीन हिंदी साहित्य जगत में चित्रा मुद्गल का नाम ख्याति प्राप्त लेखिकाओं में लिया जाता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी चित्र जी के पास अनुभव का अपार भंडार के साथ–साथ पैनी दृष्टि भी है। उनकी रचनाओं में परिवार और समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों तथा समस्याओं का मार्मिक ढंग से चित्रण हुआ है। उन्होंने समाज के विभिन्न समुदायों, विशेषकर दलितों एवं शोषितों को अपने साहित्य का विषय ही नहीं बनायी,अपितु उनके बीच बैठकर काम भी करी हैं । इस तरह उनकी मान्यता है कि सामाजिक परिवर्तन और विकास की दिशा में आंदोलनों की भूमिका निर्णायक होती है। चित्रा मुद्गल की रचनाओं का प्रतिमान स्नेह से उत्प्रेरित मानवीयता रही है, इसलिए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में कोई अंतर नजर नहीं आता । उनकी रचनाओं में मानवीयता का छाप दिखाई देता है। वे अपने कथाओं में सूक्ष्म भाषिक संवेदना के साथ कथा के अनेक अर्थ को विभिन्न छवियों में अन्वेषित कर, प्रभावी और ग्राह्य बना देने की कला में निपुण हैं।

चित्रा मुद्गल का जीवनवृत एवं व्यक्तित्व – राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रा मुद्गल, समकालीन हिंदी साहित्य जगत की बहु प्रतिष्ठित, बहु पठित, शिखरस्थ लेखिका हैं। जिन्होंने ग्रामीण और शहरी समाज के बंचित वर्ग की विषमता, रूढ़िवादिता, दमन, शोषण, अंधविश्वासों, अंतर्विरोधों और विसंगतियों को अपनी कृतियों का पाठ ही नहीं बनाया है बल्कि उनके संघर्ष को अपने जीवन का संघर्ष बनाया है। उन्होंने उन सामाजिक विसंगतियों को अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है चित्रा जी ने मानवीयता को अपनी छाप बनाकर जीवन के सत्य की खोज को अपने कथा साहित्य के जरिये प्रस्तुत किया है चित्रा जी 'अप दीपो भव' की परिभाषा को सार्थक करती हैं।

"चित्रा जी जीवन और साहित्य दोनों में ही एक जैसे जुझारूपन एवं धैर्य के साथ सक्रिय रहने वाली लेखिका हैं। व्यवधान और मुश्किलें उन्हें परेशान अवश्य करती है,लेकिन उनसे वे टूटती नहीं, अपितु अपने लिए न्य साहस जुटती हैं तथा संघर्ष के लिए नए सिरे से तैयार हो जाती हैं। ये नारी जरूर है, लेकिन अबला बिल्कुल नहीं हैं – न साहित्य में, न जीवन में समकालीन हिंदी साहित्य लेखन में उनका सृजन और उनका व्यक्तित्व अलग से पहचान में आने वाला व्यक्तित्व है उनका लेखन हिंदी साहित्य को एक खास पहचान देता है।"१

चित्रा मुद्गल के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं आचरण के जादू से जनसमूह का मंत्रमुग्ध होना स्वाभाविक है। वे स्नेह, वात्सल्य, करुणा, सौंदर्य, आनंद, प्रतिभा, ऊर्जावान, सद्भावना, सदाचरण जैसे कितने ही गुणों से परिपूर्ण लेखिका हैं। चित्रा मुद्गल के जीवनवृत को स्पष्ट करने पूर्व कुछ विद्वानों के द्वारा दिए गए व्यक्तित्व सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है।

व्यक्तित्व' अंग्रेजी शब्द का पर्याय है 'व्यक्तित्व' व्यक्ति के भावनाओं से जुड़ा हुआ है और ये भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते है। व्यक्ति में जिन गुणों अथवा विशेषताओं का समावेश होता है, वे सब 'व्यक्तित्व' के अंतर्गत आते है। व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए कोशकार ने कहा है कि "व्यक्ति का गुण या भाव अथवा वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है।"२ व्यक्ति के सोचने,समझने, रहने, जीवन यापन कने के ढंग के अतिरिक्त शरीर की बनावट, जीवन मूल्य, सिद्धांत, मनोवृत्तियां, आदतें, विचार आदि भी उसके व्यक्तित्व के विशेष गुण होते हैं। व्यक्तित्व में बाह्यतत्व और आंतरिकता को लेकर डॉ. आशा अग्रवाल के विचार इस प्रकार हैं – "बाह्य लक्षण ही व्यक्तित्व नहीं होते इसलिए वे आंशिक रूप से ही सत्य माने जा सकते हैं।"3

उपर्युक्त विद्वानों द्वारा दिए गए परिभाषाओं के आधार पर खा जा सकता है कि व्यक्ति का विशेष गुण ही उसे अन्य व्यक्तियों की श्रेणी से अलग करता है। शारीरिक एवं मानसिक प्रवृतियों के अलावे वेशभूषा भी उसकी पहचान होती है। व्यक्तित्व के निर्माण में बाह्यतत्व की अपेक्षा आंशिक रूप ही सत्य एवं महत्वपूर्ण होता है। हरेक व्यक्ति का व्यक्तित्व समयानुसार नित्य परिवर्तनशील एवं विकासशील होता है।

जन्म तथा बचपन– चित्रा मुद्गल का जन्म १० दिसम्बर,१९४३ को चेन्नई स्थित एग्मोर में एक संपन्न ठाकुर परिवार में हुआ। चित्रा मुद्गल के पिता श्री ठाकुर प्रताप सिंह उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद बैसवाड़ा क्षेत्र के प्रसिद्ध गांव निहाली खेड़ा के जमींदार ठाकुर डॉ. बजरंग सिंह के सुपुत्र थे। चित्रा मुद्गल के पिता जी भारतीय जल सेना में उच्चाधिकारी के पद पर आसीन थे तथा मुंबई में रहते थे। उनका तबादला प्रायः मुंबई, चेन्नई, विशाखापट्नम, गोवा आदि जगहों पर होता रहता था। चित्रा मुद्गल की सहेली एवं प्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया ने चित्रा और उनके

परिवार की सामाजिक स्थिति के बारे में लिखती हैं कि "ठाकुर साहब का दबदबा कुछ इस प्रकार का था कि उनकी यह सिया सुकुमारी यदि कुछ भी न करती तो भी इसका जीवन मजे से बीतता यथा समय इसे कोई बब्बर सिंह ब्याह कर ले जाता और यह ठाकुर की हवेली में सुख सुविधा में गोते लगती सामंती जीवन जीती रहती।"4

शिक्षा – चित्रा मुद्गल जी का बचपन उत्तर–प्रदेश के उन्नाव जिला के निहालीखेड़ा गाँव में बीता था। प्राथमिक शिक्षा पहला,दूसरा, तीसरा, चौथा दर्जा भरतपुर कन्या पाठशाला में पूरी हुई थी। उस समय उनके घर में काम करने वाले निम्न वर्ग के लोग चित्रा जी घरवालों द्वारा शोषित और पीड़ित थे, इन घटनाओं से उनके बाल मन को गहरी ठेस पहुँची और उन्होंने अपने पिता जी को पत्र लिखकर गाँव से मुंबई ले जाने का आग्रह किया। इसके बाद चित्रा जी अपने पिता के पास पुनः मुंबई आ गयी। यहाँ पाँचवी दर्जे में हिंदी हाई स्कूल मुंबई घाटकोपर में दाखिला कराया गया और आगे की पढ़ाई मुंबई में प्रारंम्भ हुई।

मुंबई के घाटकोपर (पूर्व) स्थित हिंदी हाईस्कूल से शिक्षा ग्रहण कर यहीं पर पूना बोर्ड से इंटरमीडियट की परीक्षा उत्तीर्ण की।मुंबई विश्वविद्यालय के के.जे.सोमैया (करमशीभाई जेठाभाई सोमैया) कॉलेज से स्नातक की पढाई की। स्नातकोत्तर शिक्षा की पढाई एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई से पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त की। बचपन में इनकी रूचि चित्रकला में विशेष रूप से थी। स्कूल में वे नृत्य की ओर आकर्षित हुई और अपने पिता जी के विरोध के बावजूद भी रंगमंच पर कार्यक्रम करती रही । उन्होंने १९६६ में जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स (सर जमशेदजी जीजीभोय) से फाइन आर्ट में (ललित कला) में डिप्लोमा करने का उपक्रम भी की थी, जो किन्हीं कारणवश पूरा न हो सका । चित्रा मुद्गल ने स्कूल के दिनों में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना एवं गुरु डोरास्वामी से भरतनाट्यम की शिक्षा भी प्राप्त की।

जीवन संघर्ष – चित्रा मुद्गल का जीवन संघर्षों से ओत–प्रोत रहा , वैसे तो चित्र जी एक चित्रकार बनना चाहती थी लेकिन नियति ने उन्हें एक सफल एवं प्रसिद्ध लिखिका बना दिया । कहा जाता है कि कर्म को हम नहीं चुनते बल्कि कर्म हमें चुन लेता, यही बात चित्रा जी के जीवन में सिद्ध हुआ। इंटरमीडिएट से ही ये ट्रेड यूनियन मूवमेंट से जुड़ गयीं । चित्रा मुद्गल ईश्वर और धर्म की अपेक्षा मानवता में विश्वास रखती हैं । उनका मानना है कि सच्ची सेवा मानवता के द्वारा एक मानव ही कर सकता है। मनुष्य वही है जो जीव मात्र के लिए जिये और उसी के लिए अपना प्राण न्यौछावर करे ।मानव के प्रति उनकी निजी सहानुभूति और संवेदना का प्रसार सर्वत्र विद्यमान है। पत्रकार ओम निश्छल से चित्रा जी की बातचीत के दौरान अपने बचपन की एक घटना को याद करते हुए बताती हैं कि – " गाँव वाले घर का, पीतल के बड़े –बड़े चूलों वाला मुख्य दरवाजा जिसकी संधियों से बड़े बप्पा को एक बार बारिन के बेटे को निम् के तने से बाँधकर हंटर पीटते हुए जो मैंने देखा तो गले से एक आर्ट चीख फूटी ....। जो मैं आज तक नहीं भूली है।"5 चित्रा जी के बल मन पर लगनेवाली हर चोट ने उनके सुकोमल हृदय को आघात किया। बचपन की उस घटना से क्षुब्द होकर उनके भावुक मन में गरीब, शोषित, पीड़ित, दलित, निम्न वर्ग के लोगों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती गयी। परिवार से प्राप्त अनुभव एवं मानसिक तनावों को उन्होंने कागज पर सृजित किया। मानसिक असंतोष के साथ–साथ सामाजिक विसंगतियों से उपजी तिलमिलाहट को विचारों और शब्दों में पिरोना शुरू कर दी। इस बारे में चित्रा जी मेरी रचना प्रक्रिया में लिखती हैं कि – "बस फिर क्या था, पैन फड़फड़ाने लगे थे। कहानियाँ जन्म लेने लगी थी। गगन त्रिशंकु, चेहरे, इस हमाम में, भूख आदि कहानियाँ पाठकों ने तीव्र प्रतिक्रिया उतपन्न करती हुयी उसी दारुण सत्य की गवाह है।"6

उन्होंने मानव जीवन विशेषकर नारी जीवन को समस्त कुंठा, जड़ता, आस्था–अनास्था, जय–पराजय और मानसिक संघर्ष को बड़ी सरलता से उद्घाटित किया है। चित्रा मुद्गल ने अपने पिता के मर्जी के विरुद्ध प्रेम विवाह किया था। जिसे कारण उन्हें बम्बई की झोपड़–पट्टी में जीवन बिताना पड़ा। उन्होंने वहाँ की आँखों देखी व आपभोगी स्थिति का निरीक्षण करके उसे प्रमाण के साथ अपने कथाओं में प्रमुख स्थान दिया है। उनके कथाओं के कथ्य मुख्यतः पारिवारिक, सामाजिक, व्यष्टिगत जीवन मूल्य एवं स्त्री शक्ति मूल्य से सम्बंधित है। चित्रा जी के रचना क्षेत्र निजी, विशिष्ट और सुरक्षित तथा महत्वपूर्ण है। चित्रा जी की आधुनिक नारी के हृदय की यथार्थ संवेदना का पर्दापण करती है। लेखिका नारी के विविध रूपों को उनकी पूर्णता के साथ उभारती हैं। लेखिका ने मुख्य रूप से मध्य और निम्न वर्ग के जीवन गाथा को प्रस्तुत किया है। चित्रा जी के कथाओं में समाज और परिवार का निरूपण प्रेम, सेक्स की कुंठाओं की स्पष्टीकरण युवावर्ग के मानसिक तनाव और आक्रोश की अभिव्यक्ति सामाजिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि– चित्रा मुद्गल का परिवार रूढ़िवादी प्रवृतियों एवं सख्त अनुशासित था। जिसने चित्रा ठाकुर से चित्रा मुद्गल बनने की राह में अनेक रुकावटें पैदा किये। चित्रा जी स्नातक करते समय हिंदी की प्रतिमान कथा पत्रिका 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' की 'सारिका' के यशस्वी सम्पादक, कवि, कथाकार, पत्रकार तथा साहित्य में गहरी रुचि रखने वाले अवधनारायण मुद्गल से १७ फरवरी १९६५ में अपने पिता और परिवार की इच्छा के विरुद्ध अंतर्जातीय प्रेम विवाह कर ली और चित्रा ठाकुर से चित्र मुद्गल बन गयीं। चित्रा जी ने अपने पिता और परिवार की इच्छा के खिलाफ होकर अवधनारायण मुद्गल जी से प्रेम विवाह कर ली। उस समय प्रेम–विवाह के विषय में सोचना भी एक अपराध जैसा था। अन्तर्जातीय प्रेम–विवाह के परिणाम स्वरूप इनके पिताजी और सपरिवार इनसे क्रोधित हुआ। उस समय चित्रा जी की उम्र २१वर्ष की थी। चित्रा जी को अपने परिवार से अत्यधिक लगाव रहा है। उन्होंने बेटे राजीव(गुड्डू) और बेटी अर्पणा (बिट्टू) को जन्म देकर अपने मातृत्व को गौरवान्वित की। बेटे राजीव का जन्म ७ मार्च १९६६ को घाटकोपर चंद्राबाई मेटरनिटी होम, मुंबई में हुआ। उन्होंने अपने दोनों बच्चों को बड़े ही लाड़–प्यार से पालन–पोषण किया एवं शिक्षा–दीक्षा करायीं। उनका पूरा ध्यान अपने पारिवारिक जीवन पर केंद्रित हो गयीं। ममता कालिया के अनुसार – " दरअसल चित्रा, अबध और बच्चों के साथ इतनी सधन–लगन के उपवन में मगन रहीं की उसने कभी इस विकल्प, नौकरी की और ध्यान नहीं दिया। चित्रा ने अपने बच्चों को बड़े प्यार से पला। महत्वाकांक्षी माँओं की तरह कैरियर और पढाई को लेकर कभी उनका जीना हराम नहीं किया। वे अपनी तरह से बड़े हुए।"7 चित्रा जी के बेटे राजीव ने ग्राफिक्स के क्षेत्र को चुना और बेटी अपर्णा ने विजुअल मिडिया में अपनी जगह बनाई। अपर्णा, लेखिका मृदुला गर्ग जी के बेटे शशांक से प्रेम करने लगी और दोनों परिवार वालों की आपसी सहमति से १० दिसम्बर, १९९२ को 'श्रीराम मंदिर' मयूर विहार में वे दोनों विवाह बंधन में बन्ध गए।

विवाह पश्चात दोनों अपने दाम्पत्य जीवन को हर्षपूर्वक जी रहे थे। चित्रा जी के घर में खुशियों ने अभी ठीक से कदम भी नहीं रखा था और दुःख का पहाड़ ऐसे आगमन हुआ कि जीवन भर न भूलने वाली कसक छोड़ गया। विवाह के नौ महीने पश्चात २२ सितम्बर, १९९३ की कालरात्रि को अलवर से दिल्ली आते हुए गुड़गाँव(गुरुग्राम–हरियाणा) के पास मार्ग में एक कर दुर्घटना ने अपर्णा को सदा के लिए कल के गर्त में डुबो दिया। २२ सितम्बर,१९९३ को दामाद शशांक भी नहीं रहे। दोनों एक दूसरे के बिनाहि रह सकते थे। साथ में जीये और साथ में ही इस दुनिया को अलविदा कह गये। अर्पणा, अवध जी की साँसें थी। इस सन्दर्भ में चित्रा जी लिखती हैं कि – "अपर्णा के बिना अवध, जी नहीं पा रहे थे। छत टिकी उनकी सूनी आँखों में जब–तब बाढ लहराने लगती,कि उस बाढ को समेटती मेरी चुन्नी टपकने लगती। फोन की घंटी बजता तो कहते – "जाकर देखो चित्रा, बिट्टू का फोन होगा। और हाँ, उससे कह दो मैंने समय पर दवा खा ली थी।"8

चित्रा जी आज भी रिक्त समय अपने परिवार के साथ बिताना पसंद करतीं हैं। चित्रा जी के कथनानुसार – "शाश्वत,अनघा, आद्या के साथ खेलना, घूमना, गण, नाचना, सैर सपाटे के लिए जाना।" इसके अतिरिक्त चित्र जी कभी– कभी अपने खली समय को अपनी रुचियों –अभिरुचियों के अनुसार भी बिताती थी, जैसे चित्र बनाना, पढ़ना, कुमार गंधर्व, को सुनना, जम कर बहस करना। नए–नए नाटक देखना,चित्र–प्रदर्शनियों में जाना, समुन्द्र में नहाना। वास्तव में चित्रा जी स्वभावगत कोमल हृदय हैं, किन्तु अन्याय, अत्याचार और शोषण के आगे झुकना उन्हें स्वीकार नहीं है। साहित्य, संगीत और कला में पारंगत चित्रा जी जन सामान्य की सेवा में संलग्न हैं।

समाज सेविका और उनके कार्य – चित्रा मुदगल एक समृद्ध परिवार से होते हुए भी गरीबी से अच्छी तरह परिचित थी। चित्रा जी ठाकुर परिवार के रहिसी जीवन को त्याग कर मजदूरों एवं श्रमिकों के हितों के लिए आवाज उठाई । चित्रा जी का जीवन संघर्षों में बीता और उसी संघर्ष को अपनी लेखनी में समेट कर अपनी रचनाओं में उकेरा है। उन रचनाओ ने पाठकों को संचेतना का अहसास कराया उन्होंने कई संस्थाओ के साथ जुड़कर कार्य किया। मुंबई की झुग्गी–बस्तियों में रहने वाली घरेलु कामगार स्त्रियों के उत्थान के लिए काम करनेवाली अशासकीय संस्था 'जागरण' में १९६५ ई. से १९७२ ई. तक सचिव के रूप में कार्य किया।

आर्थिक आजादी के लिए काम करने वाली अशासकीय संस्था 'स्वधार' के साथ सन १९७९ से १९८३ तक एक एक्टिविस्ट के बतौर कार्य किया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की 'महिला अध्ययन' इकाई की एक परियोजना निदेशक की हैसियत से 'दहेज दावानल', 'बेगम हजरत महल', स्त्री समता' नामक पुस्तकों के नियोजन से जुड़ी रहीं सन १९८६ से १९९० तक।

चित्रा जी 'केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' की सदस्या के पद सन १९९९ से २००१ तक कार्य कर चुकी हैं।

'आशीर्वाद' फिल्म अवार्ड में वर्ष १९८० ई. में बतौर जूरी की सदस्य काम किया।

महात्मा गांधी प्रतिष्ठान, मॉरीशस द्वारा उनके कार्यक्रम, 'रचनाकार से भेंट' हेतु ११ सितम्बर, १९९० में आमंत्रित की गयीं। सन १९९५ में ए.आई. आर की राष्ट्रीय नाटक प्रतियोगिता की जूरी सदस्या रह चुकी हैं। 'समन्वय' जैसी महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था की सदस्य तथा 'स्त्री शक्ति पैरलेल फोर्स' क पूर्व अध्यक्ष एवं सदस्य रह चुकी हैं। आप 'बाल विकास भारती' की पूर्व अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध फ़िल्म पत्रिका 'माधुरी' के लिए आप चार वर्ष तक आवरण कथा लिखीं।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'सूर्या', 'महाराष्ट्र टाइम्स' (अनुदित), 'श्री' (गुजराती), और 'चिमू' के कलम नाम से बल–पत्रिका 'प्राग' के लिए स्तम्भ लेखन की। सन २००२ में ४९वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों, सन २००२ में इंडियन पॅनोरमा और सन २०१३ में ६०वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार की जूरी सदस्य रह चुकी हैं।

लंदन,सूरीनाम, न्यूयार्क, जोहानसबर्ग,भोपाल और मॉरीशस के छठे, सातवें, आठवें,नौवें, दसवें और ग्यारहवें विश्व हिन्दी सम्मेलन की चयन व पुरस्कार समिति की सदस्य रह चुकी हैं।

सार्क देशों के लिए आई.सी. सी. आर की 'मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता' हेतु सन २००२ से २००५ तक जूरी सदस्य। २००३ से २००७ तक प्रसार भारती कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की बोर्ड मेम्बर एवं दूरदर्शन द्वारा प्रसारित 'इंडियन क्लासिक्स' श्रृंखला की मुख्य समिति की अध्यक्ष रह चुकी हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सीनियर फेलोशिप। इन्होंने सन २००६ से २००९ तथा २०१० से २०१३ तक इसरो के अंतरिक्ष व परमाणु ऊर्जा विभाग की संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति की सदस्य रहीं। २००६ से २००९ तक डाक–तार विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति की सदस्य तथा साहित्य को समर्पित संस्था 'अभिव्यक्ति' के मार्गदर्शिका रह चुकी हैं। इसके अतिरिक्त चित्रा जी उत्तर प्रदेश प्रदेशीय महिला मंच की संरक्षक, साहित्य के लिए समर्पित संस्था 'चेतनमयी' की संरक्षक, मार्गदर्शिका, साल २०१७ में गृहमंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की सदस्य, नोएडा, उत्तर प्रदेश स्थित दमित–दलित, पिछड़े–वंचित बच्चों के लिए काम करने वाले 'सूर्य संस्थान' की एक न्यासी,साल २०१८–२०१९ में अमृतलाल नगर सृजनपीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीयहिंदी विश्वविद्यालय वर्धा की चेयरपर्सन तथा साल २०११ एवं २०१८–२०१९ में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की पत्रिका 'भाषा' की सलाहकार समिति की सदस्या रह चुकी हैं। इतनी उपलब्धियों को पाने के बाद भी उनका सरल एवं सहज व्यवहार मन को छू जाता है। अहंकार की छाया तक उनके व्यक्तित्व पर नहीं पड़ी, यही कारण है कि उनके असंख्य प्रशंसक हैं संघर्ष भरे जीवन के ताप में तपा कुंदन–सा उनका जीवन उनके प्रशंसकों के लिए अनमोल निधि है।

साहित्य, सम्मान एवं पुरस्कार –साहित्य की अनेक विधाओं पर चित्रा जी पूरी सक्रियता से कलम चलायी है। निबंध, वैचारिक लेख, नाटक, कटाक्ष, किशोर उपन्यास, बाल कहानियाँ, अनुवाद, यात्रा वृत्तांत, डायरी, पत्र लेखन, कवितायें और अख़बारों में सामयिक विषयों पर लगातार लेखन कार्य का सुखद है, की चित्रा जी की सरजा के कहते में, सन १९६४ से २०२२ तक लगभग ७४ पुस्तकें विविध विधाओं में उपलब्ध हैं और सम्प्रति वह अपने बृहद नए उपन्यास एक काली एक सफेद पर कार्यरत है। यह भी जानना दिलचस्प है कि 'इंडिया टुडे' ने अपने २५ वर्षों के कार्यकल में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के विकास का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए, हिंदी साहित्य की क्लासिक्स कृतियों में एकमात्र चित्रा जी हैं जिनके दो उपन्यास आवां और पोस्टबॉक्स नं २०३ नालासोपारा को शामिल किया है। गुजरात के प्रतिष्ठित विश्व प्रसिद्ध उपन्यासकार सरस्वतीचंद्र कृति के लेखक के नाम पर 'श्री गोवर्धनराम त्रिपाठी सम्मान' २०२० के लिए चित्रा जी सम्मानित किया जा चुका है। पूर्व में यह सम्मान गुजरती के रघुवीर चौधरी, कन्नड़ के भैरप्पा और मराठी के भालचंद्र नेमाड़े को मिल चुका है।

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी,मुंबई द्वारा पुरस्कार समारोह सन् 2021–22 के लिए 23 मार्च,2023 को चित्रा मुद्गल को अखिल भारतीय सम्मान जीवन गौरव पुरस्कार, महाराष्ट्र भारती अखिल भारतीय हिंदी सेवा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह सम्मान मुंबई भाजपा के अध्यक्ष श्री आशीष शेलार, सुप्रसिद्ध अभिनेता आशुतोष राणा और मुंबई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय के हाथों प्रदान किया गया, जिसका साक्षी बनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ।

अपनी सशक्त लेखनी से हिंदी साहित्य को दानी बनाने वाली चित्रा मुद्गल हमारे हिंदी साहित्य जगत का गौरव हैं। जीवन की समस्याओं को बड़ी सहजता से अपनी रचनाओं में उतारने और अपने साहित्य में उनका सत्य एवं सटीक चित्र खींचने के लिए चित्रा मुद्गल जी पाठकों के बीच उनके हृदय में गहरी छाप बनाती हैं। प्रतिभा के धनी चित्रा जी को विभिन्न सम्मानों से विभूषित किया गया तथा अनेक पुरस्कार से सम्मानित किये गए हैं। उनके इस सम्मान के पीछे पाठकों का समर्थन है। पत्रकार ओम निश्छल से बातचीत में कहती हैं की – "पाठक अपनी गाढ़ी कमाई में से जिस किताब को खरीदकर या वाचनालय या मित्रों से प्राप्त कर पढ़ने का निर्णय करता है, उसकी सत्ता बहुत बड़ी है।"9

साहित्य मानव जाति के लिए सुख का साधन जुटाकर, दुःख दूर करने का मार्ग भी ढूँढता है। आज समाज में अनेक कुरीतियाँ विद्धमान हैं। जिसके कारन अनैतिकता, वैयक्तिकता, स्वार्थपरता और मूल्यहीनता के कारन नैतिक जीवन जीने वाले मनुष्य में पीड़ा, छटपटाहट, घुटन, आक्रोश और विद्रोह दिखाई देता है। साहित्य में सामाजिक लाने, मानवीय संबंधों की संवेदनशील दुनिया का निर्माण करने तथा अमानवीयताओं को समाप्त करने की क्षमता होती है। इस प्रकार सच्चा साहित्य अपने युग के ज्वलंत समस्याओं की उपेक्षा न कर इनका समाधान खोजने हेतु मनुष्य को प्रेरित करता है।हिंदी की महिला कथा लेखिकाओं की सूची में मन्नू भंडारी,कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, नासिरा शर्मा आदि के साथ जुड़ने वाला चेन्नई में जन्मी और मुंबई में शिक्षित चित्रा मुद्गल आधुनिक भारतीय साहित्य में एक समादृत नाम है। सामाजिक,आर्थिक और मानवीय अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले विविध समुदायों, विशेषकर महिलाओं,श्रमिकों,दलितों और वंचितों व उपेक्षित बुजुगों के बीच रहकर चित्रा मुद्गल ने उनके न्यायिक अधिकारों के लिए काम किया है। उनके उपन्यास 'एक जमीन अपनी', 'आवा', 'गिलिगडु', 'पोस्ट बॉक्स नं २०३ नाला सोपारा' और नकटौरा(2022 की प्रकाशित)। अपनी विशिष्ट कथा–भूमि के लिए प्रशंसित और पुरस्कृत हुए हैं। उनकी सम्पूर्ण कहानियां 'आदि–अनादि' नाम से ३ खंडों में तथा 'पेंटिंग अकेली है' प्रकाशित है।

कहानी संग्रह के अलावा अब तक उनके तीन नाटक, तीन किशोर उपन्यास, ग्यारह कहानी संग्रह, एक नवसाक्षर(जंगल), एक कथात्मक रिपोर्ताज (तहखानों में बंद अक्स), बच्चों के लिए लघु कथाओं के संग्रह सात, चार लेख व निबंध (बयार उनकी मुट्ठी में, पाटी, भीतर का आयतन, अपरिहार्य) संग्रह, चित्रा मुद्गल एक संचयन तथा मेरे साक्षात्कार की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। किन्नरों के जीवन को केंद्र में रखकर लोखा गया 'पोस्ट बॉक्स नं २०३ नाला सोपारा' उनका बहुचर्चित उपन्यास है।

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में दलित, पीड़ित नारी, बच्चे, युवा तथा बुजुर्ग इन सभी के कठिनाइयों का चित्रण है। अपने साहित्य के माध्यम से संबंधों का अर्थबोध, मानवीय संवेदना, संघर्ष की जिजीविषा, नारी चेतना, सामाजिक विसंगतियाँ, महानगरों में नौकरी पेशा नारी की समस्या, विज्ञापन जगत की अंतरंग दृश्यों का पर्दाफाश, झोपड़पट्टियों का मार्मिक चित्रण, व्यापार जगत का कच्चा–चिट्ठा, मिडिया तथा मॉडलिंग के नाम पर नारी शोषण इत्यादि जैसे जीवन मूल्यों को दुनिया के समक्ष लाने का साहस चित्रा मुद्गल जैसी लेखिका ही कर सकती है। प्रस्तुत लेख में चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य के माध्यम से जीवन मूल्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। साहित्य में मानव जीवन की सुख,दुखात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। मानव जीवन के हर एक पहलू का वर्णन करने की ताकत साहित्य में होती है।आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत में महिला लेखन की एक सशक्त परंपरा जारी है,जिसमें चित्रा मुद्गल का प्रमुख स्थान है। चयित विषय "चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में अंकित जीवन–मूल्य" के माध्यम से मानव समाज में व्याप्त विविध जीवन मूल्य तथा मानव जीवन मूल्य पर प्रकाश डालकर उसे प्रस्तुत करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य है। इसके लिए मैंने चित्रा जी के पाँच उपन्यासों और कहानी संग्रहों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत लेख में चित्रा मुद्गल के जीवन तथा रचनात्मक परिचय पर प्रकाश डाला गया है। जीवन, जन्म, माता, पिता, शिक्षा, विवाह एवं परिवार, लेखन आदि का परिचय दिया गया है। रचनाएँ–लघुकथा, कहानी, उपन्यास, बाल उपन्यास, कथात्मक रपोतार्ज, नाटक आदि रचनाओं की जानकारी को स्पष्ट किया गया है। साथ ही प्राप्त साहित्यिक सम्मान एवं पुरस्कार को स्पष्ट किया गया है। सम्पूर्ण साहित्यिक योगदान, अन्य पुरस्कार, इनके साहित्य का देशी –विदेशी भाषाओं में अनुवाद, इनके पुस्तकों पर आलोचनात्मक पुस्तकें,पत्रिकाओं के विशेषांक, अनुवादकार्य,पाठ्यक्रम में चित्र मुद्गल की रचनाएँ(राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर),टेली फिल्मों और धारावाहिकों में इनकी कहानियाँ तथा रंगमंच पर मंचित कृतियाँ आदि कार्यो पर प्रकाश डाला गया है। चित्रा मुद्गल जी अपनी कथा साहित्य में जीवन मूल्य को उद्घाटित कर अपने लेखकीय सरोवर के लिए जगह का निर्माण किया है। उनकी कथाओं में ग्रामीण परिवेश से लेकर आधुनिकता तक के स्त्री शक्ति मूल्य को वैशिष्ट्य समाहित है। सामान्य गृहिणी की स्तिथि से लेकर नौकरीपेशा स्त्रियों की भूमिका और चेतना तक, फिल्मी विज्ञापन से लेकर, पत्रकारिता के अन्याय के प्रतिकार में कड़ी स्त्री भंगिता के साथ, पारिवारिक, राजनैतिक, सामाजिक जीवन मूल्य,धार्मिक एवं आर्थिक जीवन मूल्य आदि पर बड़ी ही समग्रता एवं संतुलन दृष्टिकोण से विचार किया है। यही उनके साहित्य का केंद्रीय स्वर है।

सन्दर्भ –

१) चित्रा मुद्गल : मेरे साक्षात्कार, पृ. २८–२९
२) श्री नवल जी : नालंदा शब्द सागर, पृ. १३०९
३) डॉ. आशा अग्रवाल : आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' व्यक्तित्व कृतित्व, पृ. ४४
४) नया ज्ञानोदय : जुलाई २००७, पृ. ४९
५) चित्रा मुद्गल : मेरे साक्षात्कार, पृ. ४९
६) चित्रा मुद्गल : जिनावर – सवाल दर सवाल, पृ. १
७) इरावती –मार्च २००७, पृ. ५६
८) करुणाशंकर उपाध्याय –आवां विमर्श पृ. २६३
९) ೩೩೩.ಟ್ಜುಣಡಿಚಿಟಣಾಜಂಚಿಟ.ಎಟಜಿಂ